'सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के बाद सरसों की खेती को नई दिशा मिली'

भरतपुर, (निसं)। सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के बाद देश में विशेषकर राजस्थान में राई-सरसों की खेती को नई दिशा मिली और इस प्रदेश के किसानों की आर्थिक तरक्की में सरसों फसल का विशेष योगदान रहा।

राई-सरसों की उन्नत किस्मों एवं वैज्ञानिक तकनीकों के विकास और उनको किसानों द्वारा अपनाये जाने से इस फसल की उत्पादकता में पिछले बीस वर्षों में 5 से 6 क्विटंल प्रति हैक्टेयर तक बढ़ोतरी हुई है। इसके लिए राई-सरसों के वैज्ञानिक, विभिन्न विभागों के कृषि प्रसार कर्मी एवं किसानों की अथक मेहनत है जिसकी वजह से देश के खाद्य तेलों के उत्पादन में इस फसल का विशेष योगदान रहा है। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के रजत जयंती समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक, उद्यान एवं फसल विज्ञान डॉ. आनंद कुमार सिंह ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुये कही। डॉ. सिंह ने कहा कि ऐसे राज्य जहां धान की खेती के बाद किसान खेतों को खाली छोड़ देते हैं विशेषकर उत्तर पूर्वी राज्यों, आसाम, झारखण्ड, उडीसा, पूर्वी उत्तर प्रदेश, आदि में धान की खेती के बाद सरसों की खेती को अपनाने के लिए किसानों को प्रेरित करना होगा इसके लिए इन क्षेत्रों में विशेष जागरूकता कार्यक्रम चलाने की आवश्यकता है।

भरतपुर में सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के रजत जयंती समारोह को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद नई दिल्ली के उपमहानिदेशक डॉ. आनंद कुमार सिंह ने दीप जलाकर शुरू किया।

उन्होंने कहा कि अन्य फसलों की तरह सरसों की फसलों को भी रोगों, कीटों एवं खरपतवारों से 15-30 प्रतिशत तक नुकसान होता है। इसलिए वैज्ञानिकों को ऐसी पौध संरक्षण तकनीकों का विकास करना चाहिए जो कि आर्थिक रूप से लाभदायक और आसानी से अपनाने योग्य हो। राई-सरसों में जैविक विविधता बहुत ज्यादा है उसका अनुसंधान एवं प्रजनन कार्यकमों में प्रयोग करके अधिक उत्पादन, रोग-कीट रोधी, पाला सहनशील, जल्दी पकने वाली आदि गुणो युक्त किस्मों के विकास को प्राथमिकता देनी चाहिए ताकि नई किस्मों से उत्पादन में बढोत्तरी हो सके। उन्होने वैज्ञानिकों का आह्वान किया कि जिन प्रयोंगों से लम्बे समय तक कोई सार्थक परिणाम नहीं निकले उन्हें बंद कर देना चाहिए। वैज्ञानिकों को जीन एडीटिंग जैसे कार्य को शुरू करने की संभावना तलाशना चाहिए। इस अवसर पर रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के बाद राई-सरसों अनुसंधानों की प्रगति के बारे में चर्चा की।

इस अवसर पर निदेशालय के पूर्व निदेशकों डॉ. भूरी सिंह एवं डॉ. वाई. पी. सिंह को भी सम्मानित किया गया। साथ ही डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. भागीरथ राम, डॉ. एच.एस.मीना, डॉ. इबादलिन मॉठलांग को वैज्ञानिक वर्ग में, वीना शर्मा, मुकेश कुमार, पंकज पाठक, लालाराम एवं पी. के. तिवारी को प्रशासनिक एवं वित्त वर्ग में तथा संजय शर्मा एवं रामनारायन को तकनीकी वर्ग में किये गए विशिष्ट योगदान हेतु सम्मानित किया गया।

91% 7:22 AM
Bharatpur, Bharatpur Da...
epaper.patrika.com
पत्रिका
4/22

Rs.898

Rs.1,199

Rs.1,797

का स्थापना दिवस एवं जाट प्रतिभा सम्मान समारोह मनाने का निर्णय हुआ। महासचिव सुधीरपाल सिंह ने सिद्धेश रिसोर्ट पर होने वाले कार्यक्रम की जिम्मेदारियां सौंपी। मुख्य अतिथि ले. जनरल राज कादयान होंगे।

महिला टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त करने वाली हनुमानगढ़ महिला टीम को तीन मैचों में 4-3 पर रोके रखा लेकिन पांचवे सैट में हनुमानगढ़ की टीम 4-3 का स्कोर हासिल कर विजेता बनी व भरतपुर की टीम के

ने तासरा स्थान हासिल किया। टीम के लौटने पर जिला ओलम्पिक संघ के अध्यक्ष तेजवीर सिंह, सचिव कृपाल सिंह टैनुआ, सह सचिव धर्मवीर रिहाल ने रेलवे स्टेशन पर विजेता टीम का स्वागत किया।

नई तिलहन क्रांति की आवश्यकता-डॉ. आनंद कुमार

सरसों अनुसंधान निदेशालय का रजत जयंती समारोह

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के बाद देश में विशेषकर राजस्थान में राई-सरसों की खेती को नई दिशा मिली और इस प्रदेश के किसानों की आर्थिक तरक्की में सरसों की फसल का विशेष योगदान रहा। राई-सरसों की उन्नत किस्मों एवं वैज्ञानिक तकनीकों के विकास और उनको किसानों द्वारा अपनाए जाने से फसल की उत्पादकता में पिछले बीस वर्षों में 5 से 6 क्विंटल प्रति हैक्टेयर तक बढ़ोत्तरी हुई है। यह बात सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के रजत जयंती समारोह में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद् नई दिल्ली के उपमहानिदेशक, उद्यान एवं फसल विज्ञान डॉ. आनंद कुमार सिंह ने प्रतिभागियों को सम्बोधित करते हुए कही। उन्होंने कहा कि अन्य फसलों की तरह सरसों की फसलों को भी रोगों, कीटों एवं खरपतवारों से 15-30 प्रतिशत तक नुकसान होता है। रानी लक्ष्मीबाई केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय, झांसी के कुलपति डॉ. अरविन्द कुमार ने सरसों अनुसंधान निदेशालय की स्थापना के बाद राई-सरसों अनुसंधानों की प्रगति के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि निदेशालय के नेतृत्व में आज करीब 150 किस्मों का विकास किया गया है और सरसों में देश की पहली संकर किस्म का विकास भी इस निदेशालय

भरतपुर. सरसों अनुसंधान निदेशालय के रजत जयंती समारोह में मौजूद प्रतिभागी।

के वैज्ञानिकों द्वारा ही किया गया। निदेशालय के निदेशक डॉ. पी के राय ने सभी अतिथियों का स्वागत किया और निदेशालय द्वारा किए गए कार्यों से अवगत करवाया। पूर्व निदेशक डॉ. भूरी सिंह एवं डॉ. वाई पी सिंह को सम्मानित किया गया। साथ ही डॉ. पंकज शर्मा, डॉ. अशोक शर्मा, डॉ. भागीरथ राम, डॉ. एच एस मीना, डॉ. इबादलिन मॉउलांग को वैज्ञानिक वर्ग में, वीना शर्मा, मुकेश कुमार, पंकज पाठक, लालाराम एवं पी के तिवारी को प्रशासनिक एवं वित्त वर्ग में और संजय शर्मा एवं रामनारायन को तकनीकी वर्ग में किए गए विशिष्ट योगदान के लिए प्रमाण-पत्र एवं प्रशस्ति चिह्न प्रदान करके सम्मानित किया गया। भरतपुर संभाग के संयुक्त निदेशक तिलहन देशराज सिंह आदि मौजूद थे।